परोपकार

मौहर सिंह
रा.ज.सं., रूड़की

खूब सूरत है चांद सितारे, खूबसूरत धरती अंबर,
तुम भी ऐसे करो काम जो, दुनिया को लगे सुंदर।

अंबर, सूरज, चांद सितारे, नहीं करते कोई छल,
सब कुछ देते दुनिया को पर, नहीं चाहते प्रतिफल।
यदि होकर निःस्वार्थ भाव से, जग में कर लो सेवा,
फिर देखो कुदरत के हाथ से, क्या मिलता है मेवा।

मानव सेवा हेतु, प्रेम पैदा हो दिल के अंदर,
तुम भी ऐसे करो काम जो, दुनिया को दिखो सुंदर।

राम, कृष्ण, महावीर, बुद्व की जन्म भूमि भारत है,
कहा सभी ने प्रेम, दया और मानवता सर्वोपर है
हर ले दुःख दूसरों के, जीवन को सफल बनाए,
ऐसा ना हो कभी किसी के, दुःख में काम ना आएं।

दुखियों के दुःख देख दिल सदा, बने दया का समंदर,
तुम भी ऐसे करो काम जो, दुनिया को दिखो सुंदर।

वो मानव हैं बिल्कुल पशुवर, जो है खुद ही खुद चरते,
देख दुसरों का दुःख वो, आंखों में नहीं आंसू भरते।
दुःख लेना, सुख देना दुःखी को, ऐसा हो व्यवहार सदा,
जन्म लिया इस धरती पर तो, कर लें अच्छे काम यहां।

कह मौहर सिंह उपकार से खुशियां, मिलें हृदय के अंदर,
तुम भी ऐसे करो काम जो, दुनिया को दिखो सुंदर।।